विद्या से अमरत्व
प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार। यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है। उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

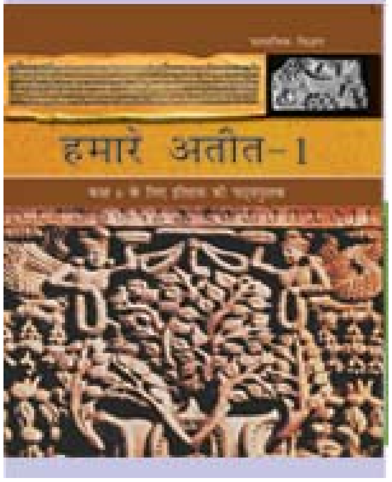

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष: 32 | अंक: 1 | जनवरी 2007

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. आस-पास के परिवेश से भाषा-शिक्षण — लक्ष्मी नारायण मित्तल — 5
2. पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक शिक्षा के बीच जुड़ाव की प्रक्रियाएँ एवं उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन — जी.सी. उपाध्याय — 9
3. कहानी सुनाने की ज़रूरत — कृष्ण कुमार — 16
4. बच्चे खुद सीखते हैं — जॉन होल्ट रूपांतर अरविंद गुप्ता — 23
5. माँ कह एक कहानी (कविता) — मैथिलीशरण गुप्त — 24
6. कहानी सुनाने में गति, स्वर और अभिनय की भूमिका — स्मिता मिश्र — 26
7. कहानी सुनते समय बच्चे क्या सोचते हैं? — हृदयकांत दीवान — 30
8. सामाजिक विज्ञान का शिक्षण — नीरजा रश्मि — 32
9. पारितोषिक — कुलदीप तिवारी — 38

सर्व शिक्षा अभियान

10. सर्व शिक्षा अभियान और बालिका शिक्षा — 42

नयी पाठ्यपुस्तकें

11. कक्षा 6 एवं 7 की इतिहास की नयी पाठ्यपुस्तकें–हमारे अतीत भाग 1 एवं 2 — सीमा एस. ओझा — 46

अनुभव

12. रिमझिम-1, एक अनोखा प्रयास — गौरी रॉय — 51

प्रसंग

13. देश को जोड़ना है तो पहले आदमी को जोड़ो — 56

पठनीय

14. बच्चे असफल कैसे होते हैं — शारदा कुमारी — 57

बालमन कुछ कहता है

15. मेरी बाउंड्री ऊँची हो जाय — हुकुम सिंह यादव — 61

परिषद् के समाचार

16. रीडिंग सैल की स्थापना — 62
17. नन्हे हाथ (कविता) — लता पाण्डे